Hindi
Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

'कफन' और प्रेमचंद की सामाजिक चेतना

• स्वीटी कुमारी • पुष्पा • शालिनी मिश्रा
• शरण सहेली

Received : November 2012
Accepted : March 2013
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : मुंशी प्रेमचंद जीवन तथा साहित्य के सूक्ष्मदर्शी तथा दूरदर्शी साहित्यकार थे। उनकी रचनाओं में वर्तमान के चित्रण के साथ-साथ भविष्य का संकेत भी मिलता है। 'कफन' उनकी एक ऐसी ही रचना है। इस कथा में प्रेमचंद ने घीसू - माधव का अमानवीकरण *(De-humanization)* किया गया है। जिस प्रकार घीसू - माधव के सामने जल रही अलाव अग्निशून्य है, उसी प्रकार उन दोनों का हृदय भी संवेदनाशून्य है। उनकी यही संवेदनहीनता उनसे पशुवत व्यवहार करवाती है और बुधिया की जीवन लीला प्रसव-पीड़ा के कारण समाप्त हो जाती है। दोनों 'कफन' के पैसों को पूड़ियों तथा शराब में उड़ा देते हैं। वे सामाजिक आडंबरों के विरोधी भी हैं। उनका यही विरोध भावी पीढ़ी के लिए एक संकेत है कि आज विरोध का यह स्वर धीमा अवश्य है, परन्तु भविष्य में यह स्वर और प्रखर तथा संगठित रूप में समाज के सामने आएगा।

संकेत शब्दः- साहित्यिक अवदान, सामाजिक चेतना, दलित अस्मिता, धर्मान्धता, युगांतकारी

स्वीटी कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

पुष्पा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शालिनी मिश्रा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : sharansaheli@gmail.com

भूमिका :

''सच्चा साहित्य कभी पुराना नहीं होता। वह सदा नया बना रहता है। दर्शन और विज्ञान समय की गति के अनुसार बदलते रहते हैं, पर साहित्य तो हृदय की वस्तु है और मानव-हृदय में तबदीलियाँ नहीं होतीं।'' (प्रेमचंद, 95)

प्रत्येक रचना अपने युग से प्रभावित होती है। साहित्यकार युग द्रष्टा हीं नहीं युग स्रष्टा भी होता है। प्रेमचंद के साहित्यिक अवदान के विश्लेषण के आधार पर यही कहा जा सकता है कि कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। वे परिवर्तनकामी लेखक थे। प्रेमचंद की कहानियों में उनके युग की धड़कन सुनाई पड़ती है। 'कफन' एक जमीनी कहानी है। आरंभिक काल से साहित्य मनोरंजन का साधन मात्र था परंतु प्रेमचंद ने हिन्दी कथा-साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के सार्थक संदर्भों से जोड़ा। उस युग की तत्कालीन समस्याएं अनेक थीं-पराधीनता, जमींदारों-महाजनों

और सरकारी अमलों द्वारा किसानों का शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, धर्मान्धता, दहेज की कुप्रथा, स्त्रियों की पराधीनता, विधवा समस्या, जातिभेद, साम्प्रदायिक-वैमनस्य एवं कुंठित मानसिकता-इन सभी समस्याओं और परिस्थितियों ने प्रेमचंद को साहित्यिक रचना के लिए प्रेरित किया। प्रेमचंद का मानना था कि मनुष्य मूल रूप से सामाजिक और सामूहिक चेतना से प्रभावित रहता है और वह जीवन के अनंत प्रवाह में सम्मिलित होना चाहता है।

प्रेमचंद की सामाजिक चेतना के विषय में भिन्न मान्यताएँ पाई जाती हैं- आर्य समाजी; गाँधीवादी; सर्वोदयी और साम्यवादी। परंतु कुछ विद्वानों की यह भी मान्यता है कि उनका किसी भी वाद में विश्वास न था, यही कारण था कि जमींदारों, राय बहादुरों, साहूकारों तथा सरकारी अधिकारियों द्वारा शोषित दीन-हीन तथा पददलित गरीब, किसान और मजदूर प्रेमचंद की संवेदना के कण-कण में समाहित हो गए। धरती की बंजरता से टक्कर लेता हुआ, मौसम के प्रहारों को सहता हुआ, किसानों का सूखा तथा नीरस जीवन प्रेमचंद की आँखों के समक्ष था। गाँवों की रूढ़ियाँ, परतंत्रता, जड़ता, कायरता और शोषण के नए-नए तरीके जहाँ एक ओर अपनी पराकाष्ठा पर थे; वहीं दूसरी ओर इनके खिलाफ सुगबुगाहट, विद्रोह तथा नए स्वप्नों का मर्म अपनी शैशवावस्था में था। देश की राजनीति में किसानों की सहभागिता बढ़ने लगी। अछूतों को अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों का ज्ञान होने लगा था, विधावाएँ समझ गई थीं कि अन्याय की रचना ईश्वर ने नहीं बल्कि समाज के चन्द ठेकेदारों ने की है; दहेज प्रथा की शिकार किशोरियाँ और कर्ज के शिकार गरीब राजनीति में केवल सहानुभूति के पात्र थे, वे धीरे-धीरे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगे थे। प्रेमचंद ने इस जागरूकता के लिए आदर्शों की तलाश की। कमला प्रसाद ने 'सामाजिक चेतना' नामक निबंध में लिखा है - ''प्रेमचंद की निगाह गरीबों के साथ थी। ये उस समय कांग्रेस की नरम शाखा की नीति के बजाय समाजवादियों के करीब थे। जहाँ कहीं वे आर्य समाज पर गाँधी के हृदय-परिवर्तनवादी नीति के अनुसार रचनाएँ लिखते हैं, वहाँ उनकी नीयत एक देशभक्त की है। राजनीतिक दृष्टि से कोई दिशा साफ न होने के कारण वे एक-एक सामाजिक सुधारवादियों को आजमाते थे। वे रचना लिखे जाने के बाद देखते कि उनके आदर्श मनुष्य के स्वभाव के साथ घुल पा रहे हैं या नहीं।'' (प्रसाद, 27)

कफन कहानी में महान कथाकार प्रेमचंद में घीसू और माधव के माध्यम से समाज की उस व्यवस्था पर प्रहार किया है, जिन्होंने घीसू और माधव पैदा किए हैं । इस कथा में प्रेमचंद ने घीसू और माधव का अमानवीकरण किया है। उनके बीच में बुझी हुई अलाव उनकी संवदेनशून्यता और अमानवीय व्यवहार का सूचक है। प्रेमचंद ने ऐसे समाज का चित्र पाठकों के सामने रखा है जो अन्याय और शोषण पर टिका है। घीसू और माधव जैसे समाज के कमजोर तबके के लोगों की बेपरवाही इसी समाज की उपज है। लेखक घीसू को किसानों से ज्यादा विचारवान मानते हैं । अपनी कमाई दूसरों को खिलाते हैं लेकिन मुँह से चूँ तक नहीं निकालते। घीसू और माधव इस शोषण के चक्र में नहीं फँसना चाहते।

कफन कहानी चरमराती सामंती व्यवस्था के अंत का उद्घोष है, समाज द्वारा दबाया हुआ दलित वर्ग जब समाज की आँख में धूल झोंककर उसके नियमों की धज्जियाँ उड़ाता है। घीसू और माधव इस व्यवस्था से प्रतिशोध लेते प्रतीत होते हैं। वे खुल कर सामाजिक नियमों की रीति-रिवाजों तथा धार्मिक पाखंडों की धज्जियाँ उड़ाते हैं ।

वस्तुत: 'कफन' प्रेमचंद रचित ऐसी कहानी है जो सार्वकालिक और सर्वदेशीय श्रेष्ठ में अग्रणी स्थान रखती है। इस कहानी में 'भूख' को माध्यम बनाकर उन्होंने जिस संवेदनशून्यता को दर्शाया है, वह अमानवीयता की पराकाष्ठा है।

भोजन मनुष्य की प्रथम आवश्यकता है। उसी प्रकार घीसू और माधव के लिए भी उनकी भूख प्रथम आवश्यकता है। फिर उनका पेट भरे और पेट भरने के पश्चात् यदि उन्हें पसंदीदा भोजन मिल जाए तो सर्वोत्तम होगा। जब इंसान को पर्याप्त मात्रा में संतुलित भोजन नहीं मिलता तो न केवल उसका शारीरिक और बौद्धिक विकास अवरुद्ध होता है बल्कि वह विभिन्न प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विसंगतियों के जाल में बड़े ही सहजता से फँस जाता है। पेट की आग (भूख) मनुष्य को हैवान बना सकती है, दूसरों के आगे गिड़गिड़ाने को बाध्य कर देती है और उपहास का पात्र बनाकर उसका आत्मविश्वास छीन लेती है।

'कफन' कहानी में भी घीसू और माधव सामाजिक परिस्थितियों से त्रस्त होकर ही अपनी नैतिकता से समझौता करते हुए आलुओं के चंद टुकड़ों के लिए बुधिया की जान की भी परवाह नहीं करते। उनकी संवेदनशून्यता परिस्थिति जन्य थी। परिस्थितियाँ बदलने पर उनमें उत्तम सद्गुणों दया, करुणा

की झलक दिखलायी पड़ती है। इसलिए ही इन दोनों की संवेदनशून्यता के लिए प्रत्यक्ष रुप से भूख और परोक्ष रुप से व्यवस्था उत्तरदायी है।

मृत्यु इंसान के जीवन में एक शोकजनक स्थिति है। ऐसी स्थिति में पराए भी संवदेनशील हो जाते है।। परंतु इस कहानी की त्रासदी यही है कि इतनी संवेदनशील स्थिति में भी घीसू और माधव को अपनी भूख मिटाने की चिंता थी। इसी कारण वे कफन के पैसों को भोज में उड़ाना कहीं न कहीं उनकी अंतर्आत्मा को कचोटता है। हमारी सांस्कृतिक संवेदना वहीं खत्म हो जाती है, जब हमारा पेट खाली हो। हमारी नैतिकता भी तभी काम करती है जब हमारे पेट में भोजन हो।

घीसू और माधव का उदार चरित्र भी हमें बाद में वहाँ दिखाई देता है जब अपना पेट भरने के पश्चात् वह भिखारी को शेष दान देता है। 'भूख' से उत्पन्न स्थितियों का जीवंत चित्रण और मानव का पशु में रुपांतरण 'कफन' कहानी की जो मार्मिकता प्रदान करता है वह हिन्दी ही नहीं विश्व साहित्य में भी दुर्लभ है।

समाज और जीवन के यथार्थ चित्रण के लिए प्रेमचंद की नजर समाज के हर पहलू पर केन्द्रित हुई । यही कारण है कि उनके कथा साहित्य का फलक अत्यन्त विराट है। उनकी कहानियों में स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, अमीर-गरीब, किसान-साहूकार, गँवार-बुद्धिमान समाज के प्रत्येक पहलू का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग समाहित हैं। जिस सामाजिक परिवेश को प्रेमचंद ने अपनी अनुभूति का क्षेत्र बनाया वह परिवेश विभिन्न रूढ़ियों से ग्रस्त था। धर्म के सतह पर ये रूढ़ियाँ अपनी जड़ें जमा चुकी थीं और कृत्रिम प्रतिष्ठा का सहारा लेकर आम जनता का शोषण कर रही थीं। 'कफन' में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि प्रेमचंद इन तथाकथित झूठे आदर्शों का पर्दाफाश करना चाहते हैं। 'कफन' के घीसू- माधव कफन के लिए मिले पैसों को शराब तथा पूड़ियाँ खाने में उड़ा देते हैं क्योंकि उन्हें धार्मिक आडम्बर में विश्वास नहीं। इतना ही नहीं वे शोषक वर्ग के प्रति अपना रोष भी प्रकट करते हैं - ''वह न बैकुण्ठ में जायेगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायेंगे जो गरीबों को दोनो हाथों से लूटते हैं।'' (प्रेमचंद, 60)

उद्देश्य :

(क) समान्य -

- इस परियोजना कार्य के द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि प्रेमचंद का कथा-साहित्य आधुनिक पीढ़ी में कितना लोकप्रिय है?
- प्रश्न तालिका के माध्यम से यह जानने का प्रयत्न किया गया है कि 'कफन' कहानी में व्याप्त दलित अस्मिता तथा नारी अस्मिता की समस्या आज भी प्रासंगिक हैं या नहीं?

(ख) विशिष्ट

- हिन्दी साहित्य के पाठक वर्ग की रूचि व विचारों को जानने तथा उनके उत्तर के आधार पर साहित्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालना और हिन्दी कथा साहित्य के अध्ययन से विमुख होती जा रही आधुनिक युवा-पीढ़ी को साहित्य से जोड़ने की दिशा में सकारात्मक पहल विकसित करना।

अध्ययन पद्धति :

- प्राथमिक पद्धति :- (i) प्रश्नावली प्रणाली
  (ii) साक्षात्कार प्रणाली
- सहायक पद्धति :- इंटरनेट, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों का प्रयोग किया गया है।
- इस परियोजना के विषय का सर्वेक्षण पटना वीमेंस कॉलेज, जे. डी. वीमेंस कॉलेज, पटना कॉलेज, वाणिज्य महाविद्यालय, मगध महिला कॉलेज की छात्राओं, प्राध्यापिकाओं और गृहिणियों को केन्द्र में रखकर किया गया है। उत्तरदाताओं के विचार को प्रतिशत के रूप में (%) प्रदर्शित कर ग्राफ द्वारा दिखाया गया है।
- प्रेमचंद की कृति - 'कफन' दलित अस्मिता, सर्वहारा वर्ग तथा नारी अस्मिता की समस्याओं को उठाकर उसके समाधान की ओर संकेत करती है।
- घीसू और माधव के माध्यम से जिस श्रमिक-मनोविज्ञान का परिचय 'कफन' में मिलता है, क्या वह श्रमिक समाज की दशा-व-दिशा का सही चित्रण प्रस्तुत करती है?
- प्रेमचंद की कहानियों में दलित वेदना और दलित चेतना के विश्लेषण द्वारा वर्तमान भारतीय समाज में विशुद्ध मानवतावाद की स्थापना दिखाई देती है।
- हमारा पारंपरिक समाज 'वसुधैव कुटुंबकम' की नीति का पालन करता है परन्तु फिर भी संपन्न एवं विपन्न वर्ग में इतनी भिन्नता क्यों है?

परिणाम और परिचर्चा :

प्रश्न–1 : प्रेमचंद ने कथा साहित्य में शोषित तथा पीड़ित वर्ग को नायक के रूप में प्रतिष्ठित किया है?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	50	0	0

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	100%	0	0

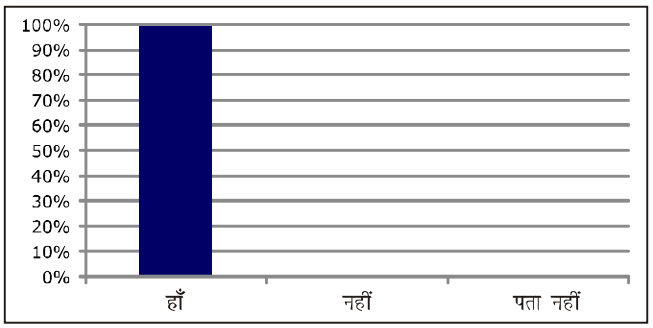

निष्कर्षत: शत–प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना है कि प्रेमचंद ने शोषित तथा पीड़ित वर्ग को नायक के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

प्रश्न–2 : 'कफन' किस कोटि की कथा है?

कुल अंक	आदर्शवादी	आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी	यथार्थवादी
50	13	02	35

कुल %	आदर्शवादी	आदेर्शान्मुख यथार्थवादी	यथार्थवादी
100%	26%	04%	70%

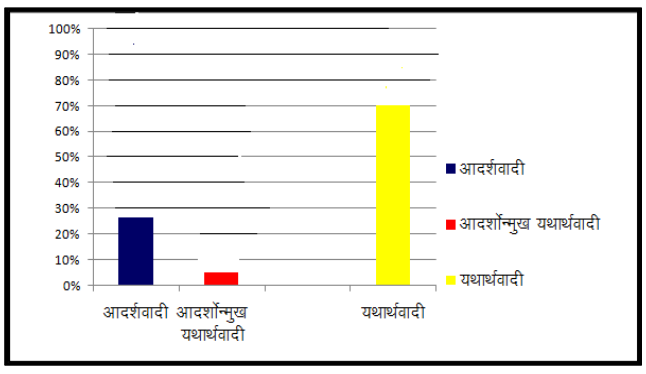

निष्कर्षत: – कुल उत्तरदाताओं में से 70% ने माना है कि कफन यथार्थवादी कथा है।

प्रश्न–3: क्या प्रेमचंद की कहानी 'कफन' धार्मिक पाखंडो पर प्रहार करती हुई मानवीय मुद्दों पर सही समाधान सुझाती है ?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	30	18	2

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	60%	36%	04%

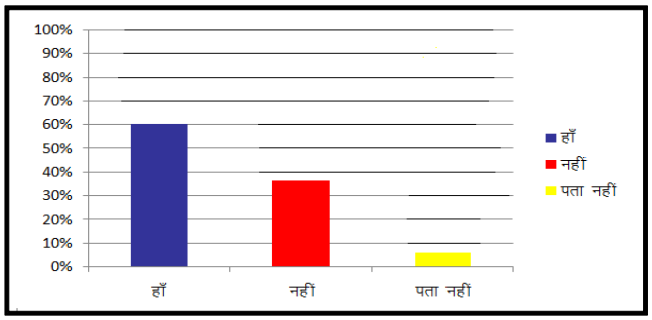

प्रश्न–4 : आज की युवा पीढ़ी क्या प्रेमचंद की कहानियों से शिक्षा ग्रहण कर सकती है ?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	50	0	0

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	100%	0%	0%

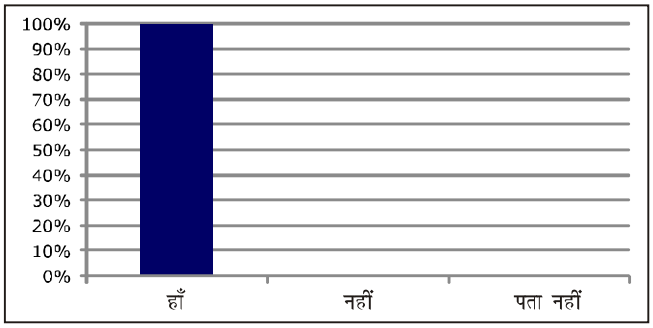

निष्कर्षत: – कुल उत्तरदाताओं में से 100% ने माना है कि प्रेमचंद की कहानियों से आज की युवा पीढ़ी शिक्षा ग्रहण कर सकती है।

प्रश्न-5 : क्या 'कफन' आज की सामाजिक स्थिति को चित्रित करने में सक्षम है?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	40	08	02

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	80%	16%	04%

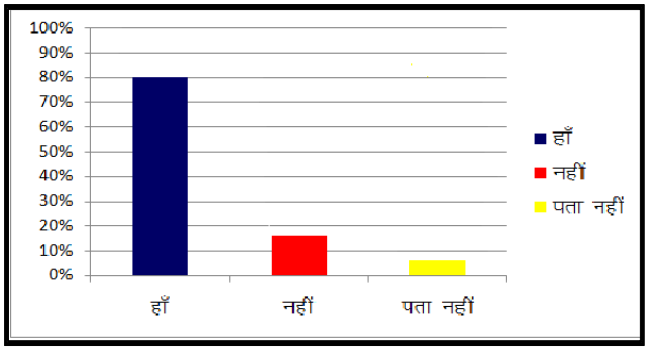

निष्कर्षत:- कुल उत्तरदाताओं में से 80% ने माना है कि 'कफन' आज की सामाजिक स्थिति को चित्रित करने में सक्षम है।

प्रश्न-6 : क्या 'कफन' कहानी सर्वहारा वर्ग तथा अभिजात्य वर्ग के बीच सामंजस्य बिठाने में सक्षम है ?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	25	15	10

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	50%	30%	20%

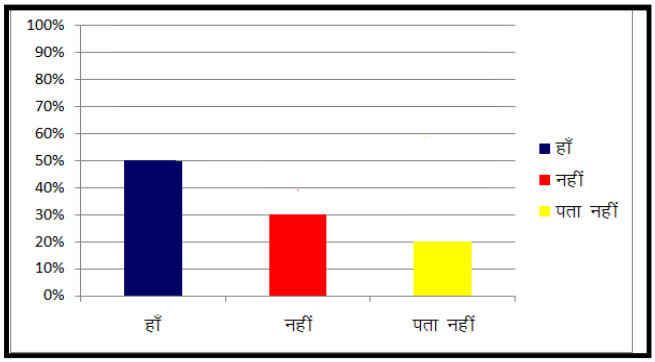

निष्कर्षत: - कुल उत्तरदाताओं में से 50% ने माना है कि 'कफन' कहानी सर्वहारा वर्ग तथा अभिजात्य वर्ग के बीच सामंजस्य बिठाने में सक्षम है, 30% उत्तरदाता इससे सहमत नहीं हैं और 20% उत्तरदाताओं को इस विषय में कोई जानकारी नहीं है।

प्रश्न-7 प्रेमचंद साहित्य संबंधी ज्ञानार्जन के स्रोत?

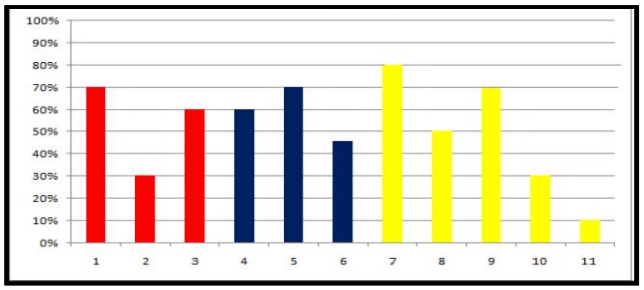

प्रिंट मीडिया
अखबार
पत्र-पत्रिका
पुस्तकालय

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
रेडियो
दूरदर्शन
इंटरनेट

निजी/व्यक्तिगत
वर्ग-अध्याय
मित्र-मंडली
स्वाध्याय
सेमिनार-कार्यशाला
भ्रमण-प्रदर्शनी

निष्कर्ष- प्रस्तुत ग्राफ में हमने दृश्य माध्यम, श्रव्य माध्यम, मुद्रित माध्यम के स्रोतों के योगदान को प्रदर्शित किया है। उन तीनों माध्यमों से प्रेमचंद के बारे निरंतर जानकारियाँ हासिल हो रही हैं, जिससे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि आज भी युवा पाठक वर्ग में प्रेमचंद की लोकप्रियता बनी हुई है। रेडियो, इंटरनेट, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाएँ, अखबार इत्यादि प्रेमचंद की अपार लोकप्रियता के परिचायक हैं।

निष्कर्ष :-

प्रेमचंद की अमर कृति 'कफन' कथा वस्तु एवं कथा शिल्प के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनाने के कारण सार्वकालिक महान कथाओं की कोटि में आती है। घीसू और माधव इस कहानी के चरित्र भर नहीं हैं बल्कि पूरे समाज की एक नंगी सच्चाई हैं। प्रेमचंद के ही शब्दों में 'जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनके हालत से बहुत कुछ अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलता से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई आश्चर्य की बात न थी।'

घीसू और माधव कर्ज से लदे थे, फिर भी चिंताओं से मुक्त थे। उनकी मानवीय संवेदना पूरी तरह मर चुकी थीं इसलिए प्रसव पीड़ा से छटपटाती बुधिया की मृत्यु को भी वे दोनों निर्लिप्त भाव से लेते हैं।

वस्तुत: 'कफन' सामाजिक यथार्थवाद का दर्पण है। प्रेमचंद ने अपने जीवन के समस्त अनुभवों का निचोड़ इसमें प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन की जिन विसंगतियों को देखा था, उनकी अभिव्यक्ति 'कफन' के अतिरिक्त कुछ अन्य हो ही नहीं सकती ।

'कफन' यथार्थ के सूक्ष्म निश्लेषण के साथ ही सर्वहारा वर्ग में उत्पन्न उस चेतना का प्रतीक है, जहाँ शोषक के पंजे से बचने के लिए शोषित अपनी अकर्मण्यता को ही अपनी ढाल बना लेता है।

'कफन' में प्रेमचंद ने जिन समस्याओं को उठाया है । वे आज भी समाज में व्याप्त हैं, भले ही उनका स्वरूप बदल गया हो। आज के संदर्भ में अपनी प्रासंगिकता के कारण ही 'कफन' आज भी हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानी मानी जाती है।

संदर्भ स्रोत:

कमला प्रसाद, ''सामाजिक चेतना'' तिवारी विश्वनाथ प्रसाद (सं०), izsepan] प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली-110002, पृ० 25-30

डॉ० सत्यकाम (2004), प्रेमचंद के कहानियाँ, अनुपम प्रकाशन, पटना-800004

डॉ० हरदयाल (2005), हिन्दी कहानी परंपरा और प्रगति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002

प्रेमचंद कुछ विचार, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद-1, 2011

प्रेमचंद ''सदगति'' सिंह दिनेश प्रसाद (सं०) (2008), हिन्दी गद्य-पद्य संग्रह, ओरियंट लॉगमैन प्रा० लि०, नई दिल्ली-110002

लिंबाले, शरण कुमार (सं०) (2010), दलित साहित्य वेदना और विद्रोह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002

शर्मा, डॉ० राम विलास (1993), प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002

शर्मा, राजमणि (2008), दलित चेतना की कहानियाँ : बदलती परिभाषाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002

सत्येन्द्र (सं०) (1976), प्रेमचंद, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-110051

प्रेमचंद, ''कफन'', सिंह, दिनेश प्रसाद (सं०) (2007), Hkkjr dh Js"B dgkfu;k¡, वातायन मीडिया एंड पब्लिकेशंस, पटना-800001, पृ० 54-60